परम–तत्व

(श्री जगदीश चन्द्र अहूजा जी के प्रवचन पर आधारित)

श्री एस० पी० आर्य (आई० ए० एस) लखनऊ

२८ वें कलियुग में आत्माओं के अवतरण के प्रमाण धर्मग्रन्थों में उपलब्ध हैं। इन्हीं के लिये परमात्मा का ज्ञान उतरा। निराकार, मोह-तत्व नींद है। साकार सपना है। अपरा शक्ति अव्यक्त स्वरूप से सम्बन्धित है। अनेक अंधों द्वारा हाथी के स्पर्श के उपरान्त अनेकों प्रकार से इसका वर्णन किया गया, परन्तु, वास्तव में हाथी है क्या, वह इनके ज्ञान से परे रहा।

"तारतम" ज्ञान वह है जो अंधकार से ज्ञान द्वारा तार दे, दूर कर दे, मिटा दे। यह 'तारतम्य' नहीं है क्योंकि तारतम्य का तात्पर्य चलते रहने या अनुक्रम से है इसे आंग्ल-भाषा में 'कान्टी-निवेशन' कहते हैं। वस्तुतः इस ज्ञान की प्राप्ति के उपरान्त जो सम्बन्ध या तारतम्य लौकिक वस्तुओं से बना था: वह भी समाप्त हो जाता है।

"खिलवत" आनन्दमयी लीला का स्थान है। इसे स्व-लीला अद्वैत कहा गया है। ५ तत्व, जल, वायु, पृथ्वी, आकाश, अग्नि सभी जड़ हैं। परम-धाम में सभी तत्व नूरमय हैं। यह ज्योति स्वरूप न होकर इलेक्ट्रानिक तत्व है। निश्चित ही यह चेतन है और जड़ता से पूर्णतया परे हैं। नूर का स्वरूप ही "अक्षर ब्रह्म" है। इनसे निकलती किरणें नूर सागर हुई। यह हृदय से सम्बद्ध है। यह आनन्द का स्वरूप है। १२००० गोपिकाएँ, सखियाँ 'अंगनाएँ' हैं। 'आनन्द' का उदय हृदय के अन्दर होता है।

आत्माओं का सम्बन्ध परमात्मा के हृदय से होता है और इस कारण इनके दुखी होने का प्रश्न नहीं उठता। परमधाम में तो 'एकदिली' है। आत्माओं (रूहों)द्वारा दुःख का खेल माँगा नहीं गया था, अपितु धनी (परमात्मा) ने पहले यह भाव अपने हृदय में उपजाया था। श्री राज के हृदय में आयी बात ही रूहों के दिल में आएगी। यह प्रक्रिया ही वाहेदत है। इसे 'क्षीर सागर' कहा गया है।

किरणें तो सब सूर्य के ही साथ हैं पर प्रकाश सभी विश्व को मिलता है। प्रकाश किसी छोटे बड़े में भेद नहीं करता। आत्म-तत्व श्री जी का (परमात्मा) निज स्वरूप है।

वाहेदत (एकदिली)से हटकर तो अक्षरातीत (पूर्णब्रह्म) भी नहीं जा सकता। 'भक्ति' जुदा करती है। 'प्रभु' वह है जो 'भक्त' से जुदा रहता है। परब्रह्म (पूर्णब्रह्म) आत्माओं से जुदा नहीं रह सकता। यह 'अव्यक्त' ,सबलिक', 'केवल' तथा 'अक्षर' से परे या अतीत है और इसीलिए 'अक्षरातीत' है।

Nijanand App

सूर्य की लीला का स्वरूप ही किरण है। सूर्य और किरण अलग नहीं हैं। यह सम्बद्ध है और यही 'निसबत' है। लहरों तथा सागर की निसबत में ही 'मारफत' (तत्व-ज्ञान) छिपा हुआ है। दुनिया की दृष्टि में 'अक्षरातीत', प्रभु तो है ही, पर यह 'बालमुकुन्द' 'बाके-बिहारी' से भिन्न है। 'अक्षरातीत' तो आत्माओं के धाम के धनी हैं।

'भगवान' किसी का प्रीतम नहीं हो सकता। गुरु नानक जी ने भी 'कोई आन मिलावे प्रीतम प्यारा' कहा है। क्या करना है, क्या नहीं करना है, यह शिक्षा द्वारा नहीं प्राप्त किया जा सकता। किसी लड़की को विवाह के उपरान्त क्या करना है, इसके लिये किसी संस्थान में शिक्षा नहीं दी जाती। परमात्मा को 'इश्क हकीकी' के बिना अन्य किसी विधि द्वारा दुनियाँ रिझा सके, यह सम्भव नहीं है।

सूचना

श्री निजानन्द आश्रम ट्रस्ट (रजि) इन्चोली की वार्षिक बैठक आश्रम प्राङ्गण में दिनांक १७ एवं १८ जुलाई १९८४ को शाम तीन बजे प्रारम्भ होगी। समस्त सदस्यों से अनुरोध है कि समय पर पधारने की कृपा करें।

एजण्डा

(१) श्री निजानन्द आश्रम की प्रगति पर विचार
(२) श्री प्राणनाथ जूनियर हाई स्कूल के कार्यों की समीक्षा एव प्रगति पर विचार
(३) आगामी भण्डारे पर अखण्ड परायणों के सन्दर्भ में अनेक सुन्दर साथ से प्राप्त नये प्रस्तावों पर विचार
(४) वार्षिक आमदनी व खर्च की समीक्षा तथा आडिटर की रिपोर्ट पर विचार
(५) धाम-दर्शन पत्रिका की समीक्षा एवं प्रगति पर विचार
(६) अन्य प्रधान की आज्ञा से

निवेदक

चमनलाल सलूजा

महामन्त्री

Nijanand App